💎🦚☸☸☸भारत (जंबुद्विप) में के बौद्धिष्ट पर्यटन स्थल ☸☸☸🦚💎

🦚🦚उर्गेलिंग मठ, उर्गेलींग, अरुणाचल प्रदेश 🦚🦚

तवांग के प्राचीन मठो में से एक उर्गेलिंग मठ तवांग शहर से ३ किमी दूर स्थित हैं| ईसके बारे में काहा जाता हैं की उसका अस्तित्त्व १४ वी शताब्दी सें हैं| इस मठ का निर्माण उर्गेन संगप्पो द्वारा किया गया था और एह भी माना जाता हैं की यह मठ उनके द्वारा बनवाये गये पहले तीन मठों में से एक हैं| एक मान्यता यह भी है की १६८३ में जन्मे छठे दलाई लामा त्सांगग्यांग ग्यामत्सो का जन्म स्थल भी हैं| वह लामा ताशी तेंजिन के बेटे और तेर्टन परमांलिंगप्पा के वंश के थे|

💎🦚☸☸ एलोरा की बौद्ध गुंफाय, अजंता, संभाजीनगर, महाराष्ट्र ☸☸🦚💎

अजंता गुंफाए महाराष्ट्र, भारत में स्थित तकरिबन २९ चट्टानों को काटकर बनी बौद्ध स्मारक गुंफाए जो द्वितीय शताब्दी इ. स. पूर्व हैं| यहा बौद्ध धंम्म से संबंधित चित्रण एवं शिल्पकारी के उत्कृष्ठ नमुने मिलते हैं| इनके साथ ही सजीव चित्रण भी मिलते हैं| यह गुंफाए अजंता नामक गाँव के सन्निकट ही स्थित हैं, जो की महाराष्ट्र के संभाजीनगर जिल्हे में हैं| (निर्देशांक: २०° ३०' उ. ७५° ४०' पू.) "अजंता गुंफाए सन १९८३ से युनेस्को की विश्व धरोहर स्थल घोषित हैं|"

"नेशनल ज्याग्राफिक" के अनुसार, आस्था का बहाव ऐसा था की प्रतित होता है, जैसे शताब्दीयों तक अजंता समेत, लगभग सभी बौद्ध विहार, ऊस समय के बौद्ध मत के शासन और आश्रय के अधिन बनवाये गये हो|

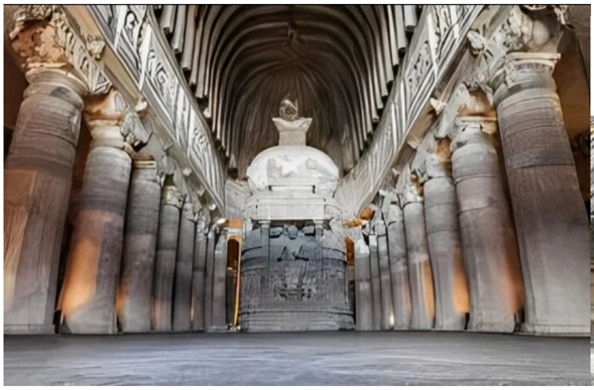 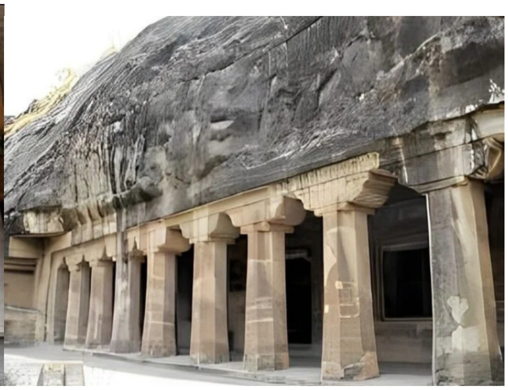

💎🦚☸☸ की मठ, पिंजुर, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

की मठ, जिसे की या की मठ के रूप में भी जाणा जाता हैं, भारत के हिमाचल प्रदेश की स्पिति घाटी में ४१६६ मिटर (१३६६८ फिट) की उचाई पर एक पहाडी के ऊपर स्थित एक आश्चर्यजनक तिब्बती बौद्ध मठ हैं| ऐक हजार (१०००) साल पहले स्थापित की मठ स्पिति घाटी से सबसे बडे और सबसे पुराणे मठो में से ऐक हैं और लामाओं के लिये ऐक महत्त्वपूर्ण धांम्मिक प्रशिक्षण केंद्र के कार्य करता हैं| मठ अपनी विशिष्ट वास्तुकला के लिये जाणा जाता हैं, इसकी बहु–स्तरीय संरचना ऐक कीले जैसा दिखता हैं, और आसपास के पहाडो और स्पिति नदी के लुभावणे दृश्य प्रस्तुत करता हैं| मठ की सफेदिवाली दिवारे, हवा में लहराते प्रार्थना झेंडे और शांत वातावरण एक आध्यात्मिक आश्रय का निर्माण करते हैं, जो न केवल बौद्ध तीर्थयात्रियों बल्की शांति और प्रकृति के साथ संबंध की तलाश करणे वाले यात्रियों को भी आकर्षित करता हैं| की मठ प्राचीन भित्ती चित्रों, शास्त्रों और कलाकृतीयों का खजाना हैं|

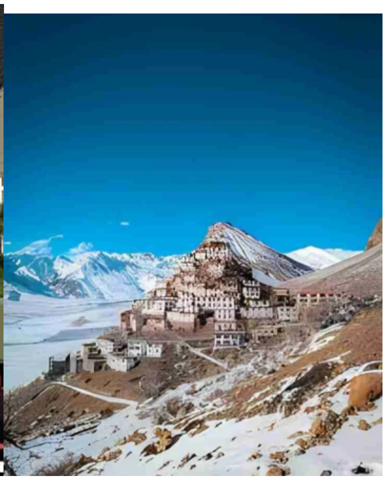

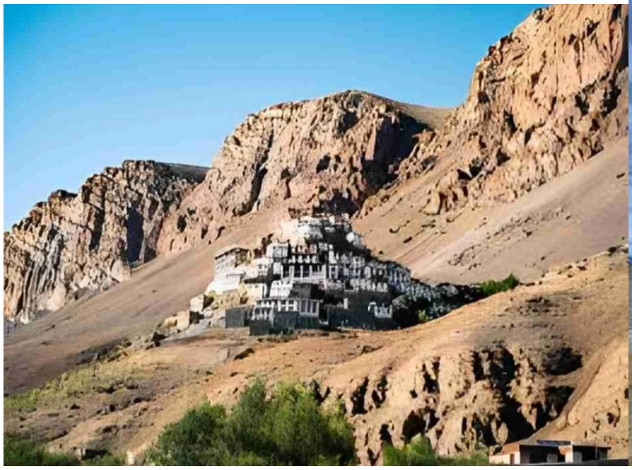
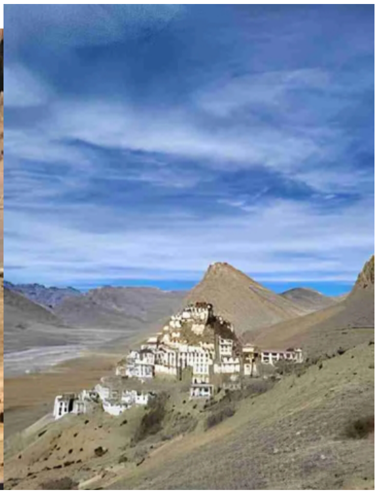

💎🦚☸☸ गौतम बुद्ध का जन्मस्थान, लुंबिनी सांस्कृतिक, लुंबिनी, नेपाल ☸☸🦚💎

लुंबिनी भगवान बुद्ध का जन्म स्थल हैं| यह नेपाल में स्थित हैं| युनेस्को तथा विश्व के सभी बौद्ध संप्रदाय (महायान, वज्रयान, थेरवाद आदि) के अनुसार यह स्थान आज नेपाल के कपिलवस्तु में हैं जहाँ पर युनेस्को के आधिकारिक स्मारक, सभी बुद्ध धंम्म के संप्रदायों ने अपने संस्कृति अनुसार के मंदिर, गुंबा, विहार, आदि निर्माण किया हैं| इस स्थान पर सम्राट अशोक द्वारा स्थापित अशोक स्तंभ में ब्राम्ही (धंम्म/पालि) लिपि की प्राकृत भाषा में बुद्ध का जन्म स्थान होणे का वर्णन किया हूवा शिलापत्र अवस्थित हैं|

सम्राट अशोक का साम्राज्य, २६० ईसा पूर्व| लुंबिनी सम्राट अशोक के अधिकार क्षेत्र में लुंबिनी स्थंभलेख|

स्तंभ की खुदाई, और उसके आधार के पास ब्राम्ही (धंम्म/पालि) लिपि में अंकित संदेश सामग्री पॉलिश किया हुवा बलुआ पत्थर,

आकार Height: Width:

काल तिसरी शताब्दी ईसापूर्व

खोज २७.४६९६५०°N ८३.२७५५९५°E निर्देशांक: २७.४६९६५०°N ८३.२७५५९५°E

स्थान लुंबिनी नेपाल

लुंबिनी स्तंभ is located in South Asia लुंबिनी स्तंभ लुंबिनी स्तंभ

मांनचित्र दिखाए Sauth Asia

मानचित्र दिखाए नेपाल

सभि दिखाए

रूम्मिनदेई स्तंभलेख या लुंबिनी स्तंभलेख (Lumbini pillar inscription) नेपाल के लुंबिनी में स्थित एक अशोक स्तंभ पर ब्राम्ही (धंम्म/पालि) लिपि में अंकित संदेश हैं, जिसकी खोज दिसंबर १८९६ में अलोईस ऐंटन फुहरर (Alois Anton Fuhrer) ने की थी| ईसी क्षेत्र में पास में ही एक दुसरा प्रसिद्ध अभिलेख मिला हैं जो ईसी विषय से संबंधित हैं| (देखे, निगाली सागर)

💎🦚☸☸ ग्युटो मठ, सिद्धबारी, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

ग्युटो मठ एक प्रसिद्ध जापानी बौद्ध मठ हैं जो तांत्रिक ध्यान, तांत्रिक अनुष्ठान कला और बौद्ध दर्शन मे मांहिर हैं| पहले दलाई लामा के प्रमुख शिष्य जेत्सुन कुंगा धोंडूप ने १४७४ में तिब्बत में इसका निर्माण किया था| १९५९ में तिब्बत पर कम्युनिस्ट चिनी कब्जे के बाद मठ को भारत में फिर से स्थापित किया गया था|

यह काग्यू तिब्बती बौद्ध धंम्म के प्रमुख करमापा का निवास स्थान हैं| करमापा का अर्थ हिन, "वह जो बुद्ध–क्रियाकलाप करता हैं|" या "बुद्ध की सभी गतिविधियों का अवतार|" मठ के मुख्य कमरे, जिसे टीसिवी स्कूल के नाम से भी जाणा जाता हैं| में बर्फ से ढके धौलाधार पर्वत की पृष्ठभूमी में बुद्ध की एक शानदार आकृती हैं| करमापा ओग्येन त्रिनले दोरजे में लगभग २०० भिक्खु गुह्यसमाज, चक्रसंवर और यमंतक सहित प्रमुख तांत्रिक शिक्षाओं का अभ्यास करते हैं| लगभग ५०० वर्षों से वे इन परंपराओं को भिक्खुओं की अगली पिढी तक पहुचांते आ रहे हैं|

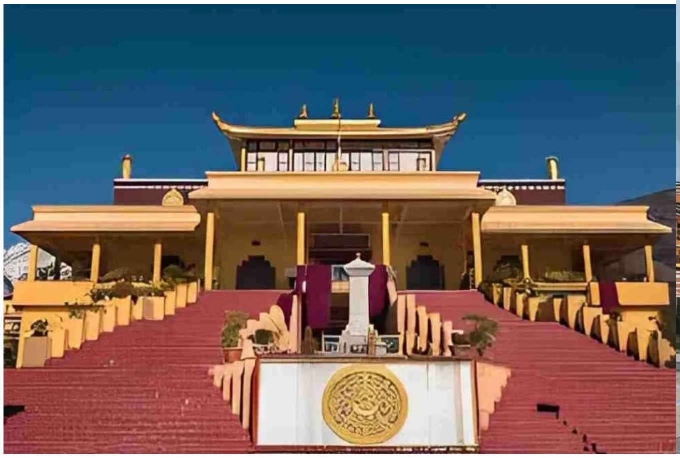

💎💎☸☸ चैत्यभूमि, दादर, मुंबई, महाराष्ट्र ☸☸🦚💎

चैत्यभुमि मुंबई के दादर स्थित भारतीय संविधान के निर्माता भारतरत्न डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकरजी की समाधी स्थली और बौद्ध धंम्म के लोगों का आस्था का केंद्र हैं| दादर के समुद्र तट पर चैत्यभूमि स्थित हैं|

दिल्ली में अपने निवास में ६ दिसंबर १९५६ को आंबेडकर का महापरिणिर्वाण हुआ और उणका पार्थिव मुंबई में लाया गया, चैत्यभूमि में ७ दिसंबर १९५६ को भदंत आनंद कौसल्यायनने अबेडकर का बौद्ध परंपरा के अनुसार दाह संस्कार किया गया| आंबेडकर का दाह संस्कार के पहले उन्हे साक्षी रखकर उनके २०००००० अनुयायीयों ने बौद्ध धंम्म की दीक्षा ली और यह दीक्षा उन्हे भदंत आनंद कौसल्यायनने दि थी|

💎🦚☸☸ तवांग मठ, तवांग, अरुणाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

तवांग मठ भारत के अरुणाचल प्रदेश के तवांग में स्थित एक बौद्ध मठ हैं| यह देश का सबसे बडा मठ हैं| यह चिनी और भुटाणी सीमा के करीब तवांग चू की घाटी में स्थित हैं|

तवांग मठ को तिब्बती में गादेन नामग्याल ल्हात्से के नाम से जाणा जाता हैं, जिसका अनुवाद "पूर्ण विजय का दिव्य स्वर्ग" होता हैं| इसकी स्थापना ५ वें दलाई लामा, न्गवांग लोबसंग ग्यात्सो की इच्छा के अनुसार १६८०–१६८१ में मेराक लामा लोद्रे ग्यात्सोने की थी| यह वज्रयान बौद्ध धंम्म के गेलुग स्कूल से संबंधित हैं, और इसका ल्हासा के ड्रेपुंग मठ के साथ धांम्मिक संबंध था, जो ब्रिटिश शासन के दौरान भी जारी रहा|

मठ तीन मंजिला हैं| यह ९२५ फिट (२८२ मिटर) लंबी परिसर की दीवार से घिरा हुआ हैं| परिसर के भितर ६५ आवासिय भवन हैं| मठ के पुस्तकालय में बहुमूल्य पुराणे ग्रंथ हैं, मुख्य रूप से कांग्युर और तेंग्युर|

💎🦚☸☸ ताबो मठ, धार गंगछमी, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

ताबो मठ (या ताबो चोस–खोर मठ) उत्तरी भारत के हिमाचल प्रदेश के स्पिति घाटी के ताबो गाँव में स्थित हैं| इसकी स्थापना तिब्बती बौद्ध लोटसावा (अनुवादक) रिनचेन जंगप्पो (महारू रामभद्र) द्वारा पश्चिमी हिमालई साम्राज्य गुगे, येशे–ओ के राजा की और से तिब्बती अग्नी वानर के वर्ष ९९६ ई. स. में की गई थी| ताबो भारत और हिमालय दोनों में सबसे पुराणा लगातार संचालित बौद्ध एन्क्लेव होणे के लिये विख्यात हैं| इसकी दीवारों पर प्रदर्शित बडी संख्या में भित्तिचित्र बौद्ध देवताओं की कहानियों को दर्षाते हैं| थंका (स्क्रोल पेंटिंग), पांडुलिपियां, अच्छि तरह से संरक्षित मुर्तियां, भित्तिचित्र और व्यापक भित्तिचित्रों के कई अमूल्य संग्रह हैं जो लगभग हर दीवार को ढंकते हैं| मठ को नविनिकरण की आवश्यकता हैं क्योंकि लकडी की संरचनाये पुराणी हो रही हैं और थंका स्क्रोल पेंटिंग फिकी पड रही हैं| १९७५ के भूकंप के बाद मठ का पुनर्निर्माण किया गया और १९८३ में एक नया डू–कांग या असेम्ब्ली हॉल बणाया गया| यही पर १४ वें दलाई लामाने १९८३ और १९९६ में कालचक्र समारोह आयोजित कीए थे| मठ को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा भारत के राष्ट्रीय ऐतिहासिक खजाने के रूप में संरक्षित किया गया हैं|

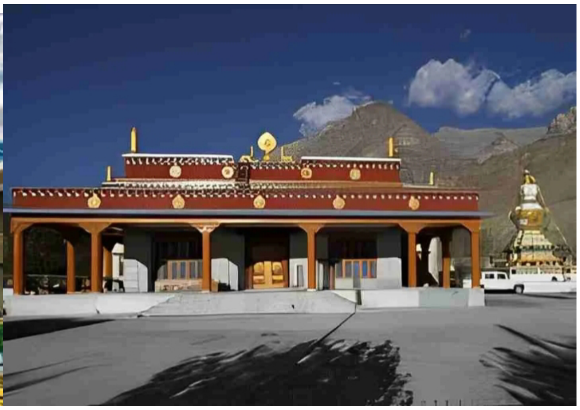

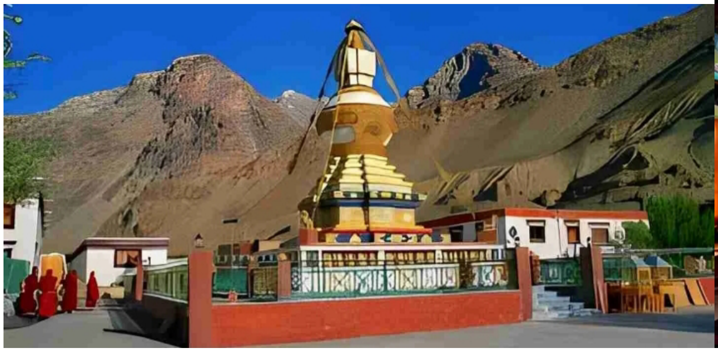

💎🦚🏵🏵 तालाजा गुफाए, तालाजा, भावनगर, गुजरात 🏵🏵🦚💎

तालाजा गुंफाए भारतीय राज्य गुजरात के भावनगर जिले के तालाजा में स्थित हैं| ये गुंफाए परित्यक्त शंक्वाकार चट्टानों को काटकर बानाई गई हैं| इस समूह में कुल ३० गुंफाए शामिल हैं, जिनमें से लगभग १५ जल कुंड हैं| इन गुंफाओं की वास्तुकलाओं को "एभल मंडप" के नाम से जाणा जाता हैं| गुंफाओं के हॉल साधारण और बिना सजावट कें हैं| "मुखभाग पर चैत्य खिडकीयां हैं, जिनके नीचें एक चौडा किनारा हैं|"

चैत्य और कक्षों का निर्माण दुसरी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध प्रभाव के समय किया गया था|

दुसरी शताब्दी सीई में क्षेत्रपों के शासनकाल के दौरान, कक्षों और हॉलों पर जैन प्रतीक भी उकारें गए हैं| महाराष्ट्र में शैलकृत वास्तुकला के प्रारंभ होणे से पहले ही इन गुंफाओं का निर्माण किया गया था| कूछ ऐतिहासकारों के अनुसार, गुंफाओं की सही तिथि का निर्धारण नहीं किया जा सकता हैं, लेकीन कूछ का मानना हैं की इंनका निर्माण पहली शताब्दी सीई के अंत में शूरू हुवा हैं|

💎🦚☸☸ थोटलाकोंडा बौद्ध परिसर, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

थोटलाकोंडा बौद्ध परिसर भारत के आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम में लगभग १५ किमी (९.३ मील) दूर भिमुनिपट्टनम के पास एक पहाडी पर स्थित हैं| यह पहाडी समुद्र तल से लगभग १२८ मिटर (४२० फिट) ऊपर हैं और समुद्र को देखती हैं| पहाडी की तलहटि में कई चट्टानी कुंडो की मौजुदगी से इसका तेलुगू नाम तोतलाकोंडा पडा| २०१९ में, मान्सून के कारण स्तूप आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गया था, लेकीन २०२१ तक ४२००००० रुपये की लागत से बहाल कर दिया गया|

थोटलाकोंडा प्राचीन कलिंग के प्रभाव में था, जो श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न हिस्सों में बौद्ध धंम्म के प्रसार का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत था| इसके अलावा, यह ८३.३ डिग्री मेरिडियन इस्ट के आसपास स्थित सभि बौद्ध प्रमुख स्थानो पर जाणे के लिये उच्च समुद्र से आणे वाले सभी आगंतुको के लिये प्रवेश के बंदरगाहों में से एक हैं| यह. भारतीय संस्कृती, विशेष रूप से बौद्ध धंम्म के महासागर पार प्रसार की प्रक्रिया में अंतरदृष्टी प्रदान करता हैं|

स्वास्थ्यवर्धक जलवायूवाला समुद्र तट पर एक पहाडी बौद्ध भिक्खूओं के लिये यहा मठ परिसर बणाने के लिये एक आदर्श आकर्षण था| यहा की गहरी घुमावदार तटरेखा से घिरा शांत समुद्र, जहाजों को लंगर डालने के लिये एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करता हैं| दूर-दूर से भारत आणे वाले लोंग ८३.३ डिग्री मेरिडियन ईस्ट के देशांतर से अच्छि तरह से निर्देशित होते हैं| थोटलाकोंडा, सारनाथ, कुशिनगर, और लुंबिणी लगभग एक ही देशांतर पर स्थित हैं| समुद्र के रास्ते भारत आणे वाले लोग यात्रा के लिये सबसे छोटा रास्ता तलाशते थे| कई लोग थोटलाकोंडा में रुकते थे, एक पारगमन बिंदू जहाँ उन्होने अपने जहाजो को लंगर डाला, थोडी देर के लिये पहाडी पर आराम किया, और फिर महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थलों को देखने के लिये ८३.३ डिग्री पूर्वी मेरिडियन के साथ आगे बढे|

थोटलाकोंडा भारतीय नौसेना द्वारा नौसैनिक अड्डे की स्थापना के लिये हवाई सर्वेक्षण के दौरांन सामने आया| इसकी खोज के बाद, आंध्र प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा १९८८ से १९९३ तक प्रमुख उत्खनन कीए गये| उत्खनन ने एक हिनयान बौद्ध परिसर के अस्तित्त्व को स्थापित किया जो २००० साल पहले फला-फुला| परिसर के दक्षिण में एक तालाब हैं जो मठ के निवासीयों के लिये जल स्त्रोत के रूप में कार्य करता था|

उत्खनन से सातवाहन राजवंश के सिसे और रोमन चांदी के सिक्के मिले हैं जो विदेशी व्यापार का संकेत देते हैं; टेराकोटा टाईले, प्लास्टर सजावटी टूकडे, मूर्तिकला पॅनल, पथ्ठर में लघु स्तूप मॉडेल और बुद्ध के पैरों के निशाण भी पाये गये हैं| उत्खनन से धंम्मा (पालि) लिपि में बारह शिलालेख भी मिले| पॉलीग्राफिक अध्ययनो से, ऐसा प्रतित होता हैं की पहाडी को सेनागिरी के नाम से जाणा जाता था; पालि मे सेना का अर्थ हैं "बडा, श्रेष्ठ|"

थोटलाकोंडा की चरम गतिविधी २ शताब्दी ईसा पूर्व और २ शताब्दी सीई के बीच तेज रोमन व्यापार और विदेशों में भेजे गए धांम्मिक मिषणों के कारण थी| थोटलाकोंडा विशाखापत्तनम में बाविकोंडा और पावुराल्लाकोंडा जैसे आस-पास के स्थलों के साथ अस्तित्त्व में आया| दिन में चमकते उंचे स्तूप, हल्के चूने के प्लास्टर और रात में बत्ती के दियों की कतारे, समुद्री यात्रियों के लिये मार्गदर्शक स्थल के रूप में कामं करते होंगे| ऐसा प्रतित होता हैं की इस मठ को कोई शाही संरक्षण नहीं मिला था| हालाकिं व्यापारियों और स्थानीय विश्वासियों ने इस परिसर का समर्थन किया था| अपने सूनहरे दिनों में, थोटलाकोंडा में १०० से जादा भिक्खुओं को रखा जा सकता था| परिसर में भोजन, कपडे, दवाईयों के भंडारण की व्यवस्था थी और यह एक धांम्मिक सह शैक्षणिक केंद्र के रूप में कार्य करता था| ऐसा प्रतित होता हैं की यहा निकाय बौद्ध धंम्म का पालन किया जाता था, जिसमें गौतम बुद्ध की पूजा मानव प्रतिनिधित्त्व के बजाय पादूकाओं और अंन्य भौतिक अवशेशों जैसे प्रतिकों के माध्यम से की जाती थी|

💎🦚☸☸ दीक्षाभूमि, नागपूर, महाराष्ट्र ☸☸🦚💎

दीक्षाभूमि भारत में बौद्ध धंम्म का एक प्रमुख केंद्र हैं| यहा बौद्ध धंम्म का पुनरुत्थान हुवा हैं| महाराष्ट्र राज्य की उपराजधानी नागपूर शहर में स्थित इस पवित्र स्थान पर बोधिसत्त्व परमपूज्य डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकरजी ने १४ अक्तूबर १९५६ को सम्राट अशोक विजयादशमी के दिन पहले महास्थविर चंद्रमणी से बौद्ध धंम्म दीक्षा लेकरं अपने ५०००० (पांच लाख) से अधिक अनुयायीयों को बौद्ध धंम्म की दीक्षा दि थी| तिसरंण, पंचशिल और अपनी २२ प्रतिज्ञांए देकर डॉ. आंबेडकरने अपने बहुजनों का धंम्म परिवर्तन किया| अगले दिन फिर १५ अक्तुबर को २००००० (दो लाख) से अधिक लोगों को बौद्ध धंम्म की दीक्षा दि और स्वयं भी फिरसे दीक्षित हुये| देश तथा विदेश से हर साल यहा २५००००० (पच्चीस लाख) से अधिक आंबेडकरवादी और बौद्ध अनुयायी आते हैं| हर साल १४ अक्तुबर को यहा हजारों की संख्या में लोग बौद्ध धंम्म की दीक्षा लेते हैं, परावर्तीत होते रहते हैं| यहा १४ अक्तूबर २०१५ में ५०००० (पचास हजार) लोग दीक्षित हुवे हैं| १४ अक्तुबर २०१६ में २०००० (बिस हजार) और २५ अक्तुबर २०१६ को मनुस्मृती दहन दिवस के उपलक्ष में ५००० (पांच हजार) ओबीसी लोगों ने बौद्ध धंम्म की दीक्षा ली हैं| महाराष्ट्र सरकार ने दीक्षाभूमि को 'अ' वर्ग (A Class) पर्यटन क्षेत्र का दर्जा दिया हैं| नागपूर शहर के सभी धांम्मिक व पर्यटन क्षेत्रों में यह पहला स्थल हैं, जीसे ए क्लास का दर्जा प्राप्त हुआ हैं|

💎🦚☸☸ धनकर मठ, लाहुल, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

धनकर मठ, जिसे धनकर गोंपा भी कहा जाता हैं, उत्तरी भारत के हिमालय क्षेत्र में स्पिति और लाहुल जिल्हे में स्थित एक बौद्ध विहार हैं| यह हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित हैं| यह मठ काजा और ताबो के बीच एक चट्टान पर स्थित हैं| यहां से स्पिति नदी का अद्भुत नजारा देखा जा सकता हैं| इस मठ मे 'वैरोचरण' की एक मूर्ती हैं, जिसमें ४ दिशाओं में बैठे बुद्ध की चार मुर्तियां हैं, साथ ही प्राचीन पेंटिंग, भित्तिचित्र और ग्रंथ भी हैं| धनकर गोंबा १००० साल से भी ज्यादा पुराणा हैं और यह घाटी के बाकी हिस्सों से मोटरेबल रोड के जरिय जुडा हुंआ हैं, जो सिर्फ छोटे वाहनो के लिये ठीक हैं| पुराणे मठ के निचे शिचिलिंग के छोटे से गाँव में एक नया मठ हैं| पुराणा मठ महान अनुवादक, रिनचेन जंगपो से जुडा हुआ हैं और इसके परिसर में एक साथ कई बहुमंजिला इमारते हैं|

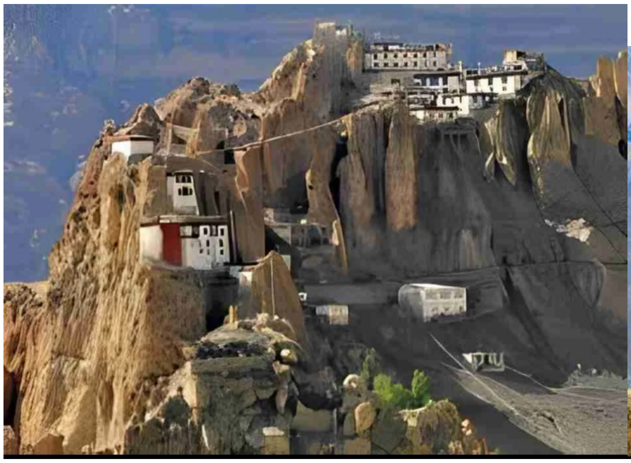
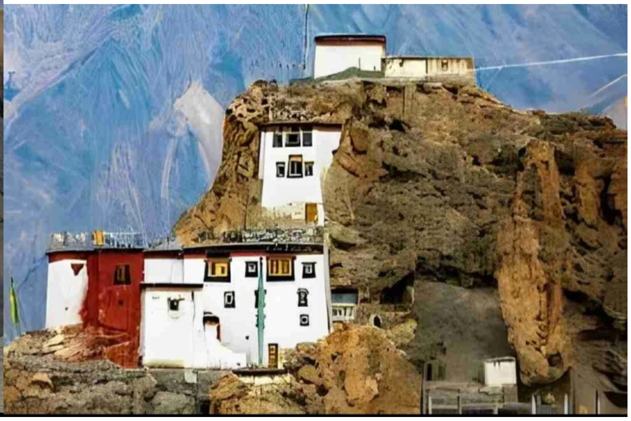

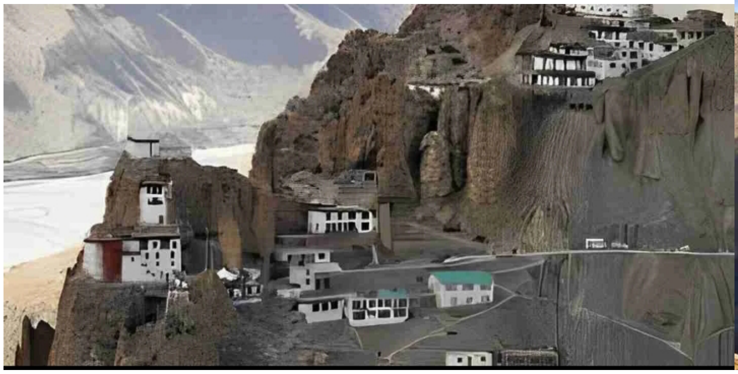

💎🦚☸☸ ध्यान बुद्ध की मूर्ती, अमरावती, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

ध्यान बुद्ध, भारत के आंध्र प्रदेश के अमरावती में स्थित ध्यान मुद्रा में बैठे गौतम बुद्ध की एक मूर्ती हैं| २०१५ में बनकर तैय्यार हुई यह मूर्ती १२५ फिट (३८ मिटर) उंची हैं और कृष्णा नदिं के तट पर ४.५ एकड की जगाह पर स्थित हैं| यह अमरावती काला विद्यालय की मुर्तियों की आधुनिक प्रतिकृतीयों से सुशोभित हैं, जो २०० ईसा पूर्व से २०० इसवी तक इस क्षेत्र में फली–फुली|

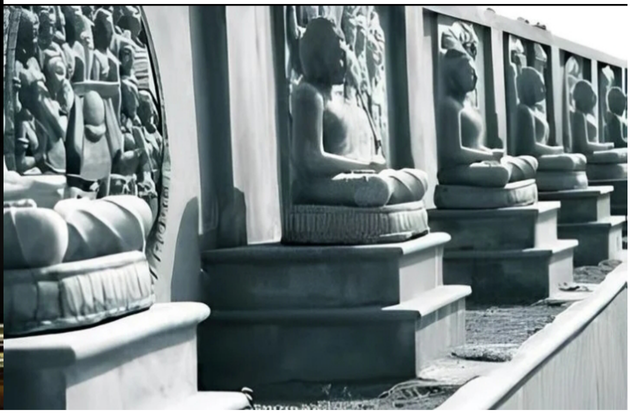

💎🦚☸☸ नागार्जुनकोंडा, नागार्जुनकोंडा, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

नागार्जुनकोंडा (आईएसओ: नागार्जुनकोंडा, जिसका अर्थ हैं नागार्जुन पहाडी) एक ऐतिहासिक शहर हैं, जो अब भारतीय राज्य आंध्र प्रदेश के पालनाडू जिल्हे में नागार्जुन सागर के पास स्थित एक द्विप हैं| यह भारत के सबसे समृद्ध बौद्ध स्थलो में से एक हैं, और अब यह लगभग पुरी तरह से नागार्जुन सागर बांध द्वारा बणाई गई झिल के णीचे स्थित हैं| बांध के निर्माण के साथ, नागार्जुनकोंडा में पुरातात्त्विक अवशेष जलमग्न हो गए, और उन्हे खुदाई करके उच्च भूमि पर स्थानांतरित करना पडा, जो एक द्विप बन गया हैं| यह स्थल कभी एक बडे बौद्ध मठ विश्वविद्यालय परिसर का स्थान था, जो चीन, गांधार, बंगाल और श्रीलंका से छात्रों को आकर्षित करता था| (उद्धरण वांच्छित) कई महायान बौद्ध और हिंदू मंदिरों के खंडहर हैं| यह एक अंन्य महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल, अमरावती स्तूप से १६० किमी पश्चिम में हैं| नागार्जुनकोंडा में पाई गई मुर्तियों को अब ज्यादातर भारत और विदेशों के विभिन्न संग्रहालयों ले जाया गया हैं| वे विशिष्ट "अमरावती शैली" में दुसरे सबसे महत्त्वपूर्ण समूह का प्रतिनिधित्त्व करते हैं, जिशे कभी–कभी "बाद का आंध्र" भी कहा जाता हैं| याहां एक महल क्षेत्र भी हैं, जिसमें धर्मनिरपेक्ष राहतें हैं, जो इतनी प्रारंभिक तिथी से बहुत दुर्लभ हैं, और रोमन प्रभाव दिखाती हैं|

आधुनिक नाम नागार्जुन के नाम पर रखा गया हैं, जो महायान बौद्ध धंम्म के एक दक्षिणी भारतीय गुरू थे, जो दुसरी शताब्दी में रहते थे, जिन्हे एक बार, शायद गलत तरीके से, इस साईट के विकास के लिये जिम्मेदार माना गया था| मुल नाम, जिसका उपयोग ऊस समय किया गया था, जब यह साईट सबसे अधिक सक्रिय थी, "विजयपुरी" था|

आंध्र प्रदेश में यह नागार्जुनकोंडा (कभी–कभी नगार्जूनिकोंडा) साईट विहार में बराबर गुंफाओं के पास नागार्जुन (या नागार्जुनी) गुंफाओं के साथ भ्रमित नहीं होना चाहीय|

💎🦚☸☸ नामग्याल मठ, कांगडा, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

नामग्याल मठ हिमाचल प्रदेश के कांगडा जिल्हे मे धर्मशाला के पास मैकलोडगंज में स्थित हैं| मैकलोडगाम को "छोटा ल्हासा" भी कहा जाता हैं| माना जाता हैं की इस मठ की स्थापना तिसरे दलाई लामाने की थि, हालां की यह विचार दुसरे दलाई लामा द्वारा दिया गया था| वर्तमान में, यह १४ वें दलाई लामा, तेनजिन ग्यात्सो का निजी मठ हैं| इस मठ को दिया गया दुसरा नाम नामग्याल तांत्रिक महाविद्यालय हैं| अब इस महाविद्यालयने बोधगया, दिल्ली, कुशिनगर, और शिमला जैसे देश भर के विभिन्न शहरों में अपनी शाखाएं खोली हैं| पहले के दिनों में, इस स्थान का उपयोग दैनिक तिब्बती अनुष्ठानों और रीति–रिवाजों के संचालन के लिये किया जाता था, और तिब्बती विद्रोह के तुरंत बाद इसे तिब्बत से धर्मशाला ले जाया गया था| बौद्ध तिर्थयात्री और भक्त बौद्ध शिक्षाओं के साथ–साथ ध्यान की कला शिखणे के लिये अपने जीवनकाल में कम से कम एक बार इस खूबसुरत विहार में आते हैं| मठ में लगभग २०० भिक्खु रह सकते हैं जो दुर्लभ कौशल, तकनिक, अनुष्ठान, तांत्रिक अभ्यास, बौद्ध धंम्म ग्रंथ, और संस्कृति को प्रस्तुत करणे में शामिल हैं| दलाई लामा के खूबसुरत मठ की वजह से हिमाचल में बौद्ध धंम्म के पर्यटन में उच्छाल आया हैं|

नामग्याल मठ का इतिहास वर्ष १५६४ से शुरू होता हैं, मठ को पहले तिब्बत में फेंडे लेक्शे लिंग के नाम से जाणा जाता था| मठ को इसका नाम विजया अनुष्ठान प्रार्थना से मिला हैं, जो १५७६ में देवी नामग्याल मां की प्रार्थना करके मंगोल राजा अल्ताई खान के संम्मान में आयोजित की गई थी| तिब्बत पर चिनी आक्रमण के बाद, १४ वें दलाई लामा शरण के लिये भारत आयें और १९५९ में नामग्याल मठ की स्थापना की| लगभग ५५ भिक्खुओंने मिलकर ल्हासा के मुल मठ का निर्माण किया|

मठ का स्वरूप नीचे से ऊपर तक बर्फ से ढके पहाड जैसा दिखता हैं| मठ का चौडा प्रांगण भी मनभावन हैं, साथ ही एक टेढी–मेढी सिढीयां भी हैं जों मुख्य पूजा स्थल तक ले जाती हैं| दुखांग मठ में सभा कक्ष का नाम हैं| इस मठ की लकडी की फर्ष और कांस्य मुर्तियां ईसके तिर्थयात्रियों और आगंतुको कें बीच एक आनंदमय और आध्यात्मिक सार पैदा करती हैं| मठ में भगवान गौतम बुद्ध, अवलोकितेश्र्वर और पद्मसंभव की आनंदमयी छवियां हैं| इस मठों की दीवारों के भितर प्रदर्शित थंगका पेंटिंग पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को सबसे अधिक आकर्षित करती हैं| मठ में आकर्षक गोम्पा और चमकदार प्रार्थना चक्र बिखरे हुये हैं, जो वातावरण में एक सुखद सुखदायक ध्वनी प्रदान करते हैं| स्थानीय पर्यटक और यात्री भी इस मठ की ओर आकर्षित होते हैं क्योंकी याहां का वातावरण सुखदायक हैं और याहां की सुंदरता भी मनमोहक हैं| धर्मशाला में नामग्याल मठ में एक गेस्ट हाऊस के साथ–साथ एक कैफे और एक पुस्तककालय भी हैं| दलाई लामा और बौद्ध भिक्खुओं के लिये एक निजी स्थान के रूप में सेवा करते हुये, मठ की समृद्ध संस्कृति और विरासत ने दुनिया भर से हिमाचल में इस लोकप्रिय बौद्ध तीर्थस्थल पर आणेवाले यात्रियों पर एक मंत्रमुग्ध कर देनेवाला प्रभाव डाला हैं| भारत में जीर्णोद्धार के बाद, नामग्याल मठने ल्हासा में लोकप्रियता हासिल की और दुनियाभर में अपने महत्त्व का विस्तार किया| दलाई लामा के नामग्याल मठ से प्रभावित होकर १९९२ में इथाका, न्यूयॉर्क में बौद्ध अध्ययन संस्थान की स्थापना की गई थी| पर्यटकों के लिये, नामग्याल मठ दुनिया में बौद्ध धंम्म के धांम्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व के कारण हिमाचल प्रदेश में एक जरुरी मठ हैं| नामग्याल मठ तक पहुंचना आसान हैं, क्योंकी कोई धर्मशाला हवाई अड्डे या पठाणकोट रेल्वे स्टेशन पर उतर सकता हैं| वहां से, इस ऐतिहासिक मठ तक पहुंचने के लिये प्री–पेड कॅब या टॅक्सी किराये पर लें| बौद्ध धांम्मिक स्थल तक पहुंचने के लिये कोई व्यक्ती पैदल यात्रा भी कर सकता हैं, या स्थानीय परिवहन किराए पर ले सकता हैं| धर्मशाला से मैकलोडगंज पहुंचने के लिये स्थानीय बसे भी उपलब्ध हैं| फरवरी से मार्च तक का समय नामग्याल मठ की यात्रा के लिये आदर्श समय माना जाता हैं, क्योंकी इस दौरांन मौसम हिमालय में पैदल यात्रा के लिये एकदम सही होता हैं| उसके अलावा, गरमियों और वसंत ऋतू के दौरांन, हिमालई शहर जिवंत हो उठता हैं, जो अपने आगंतुको के लिये इस क्षेत्र को खुशनुमा बना देता हैं|

💎🦚☸☸ नामसाई का स्वर्ण शिवालय, नामसाई, अरुणाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

नामसाई का स्वर्ण शिवालय, जिसे ताई–खामती भाषा में कोंगमु खाम के नाम से भी जाणा जाता हैं, एक बर्मी शैली का बौद्ध विहार हैं, जिसे २०१० में खोला गया था| यह भारत (जंबुद्विप) के अरुणाचल प्रदेश के नामसाई जिल्हे में २० हेक्टर (४९ एकड) के परिसर में स्थित हैं और निकटतम रेल्वे स्टेशन तिंनसूकिया, असम से ६८ किमी (४२ मील) की दुरीपर हैं| अरुणाचल के राजनेता चौना मीन, स्थानीय विधायकने राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गये भूखंडपर शिवालय के निर्माण में ३००००००० (तीन करोड) की राशी खर्च की थी| विश्व त्रिपिटक फाऊंडेशन वर्तमान में कोंगमु खाम को भारत में पहले अंतरराष्ट्रीय त्रिपिटक केंद्र के रूप में विकसित कर रहा हैं|

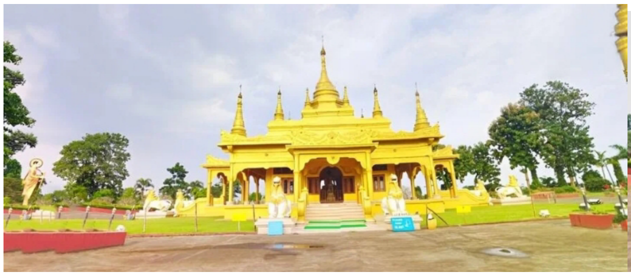

💎🦚☸☸ नालंदा महाविहार, बरगांव, बिहार ☸☸🦚💎

नालंदा (IAST: नालंदा, उच्चारण [na:lenda:]) प्राचीन और मध्यकालीन मगध (आधुनिक बिहार), पूर्वी भारत में एक प्रसिद्ध बौद्ध महाविहार (महान मठ) था| इसे व्यापक रूप से प्राचीन दुनिया में शिक्षा के सबसे महान केंद्रों में से एक माना जाता हैं, और इसे अक्सर "दुनिया का पहला आवासित विश्वविद्यालय" काहा जाता हैं, यह राजगृह (अब राजगिर) शहर के पास स्थित था, जो पाटलीपुत्र (अब पटणा) से लगभग ९० किमी (५६ मील) दक्षिण–पूर्व में हैं| ४२७ ई. से लेकरं लगभग १४०० ई. तक लगभग १००० वर्षों तक संचालित, नालंदा ने ५ वी और ६ वी शताब्दी ई. के दौरांन कला और शिक्षाविदो के संरक्षण को बढावा देणे में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक ऐसा काल जिसे तब से विद्वानोंद्वारा "भारत (अर्हत/जंबुद्विप) का स्वर्ग युग" कहा जाता हैं| नालंदा की स्थापना गुप्त साम्राज्य के सम्राट कुमारंगुप्त प्रथम ने ४२७ ई. के आसपास की थी, और इसे कई भारतीय और जावानी संरक्षको – बौद्ध और गैर–बौद्ध दोनो का – समर्थन प्राप्त था| पाल साम्राज्य (७५०–११६१ ई.) के शासको कें समर्थन से नालंदा का विकास जारी रहा| पालों के पतन बाद, नालंदा के भिक्खुओं को बोधगया के पीठपतियों द्वारा संरक्षण दिया गया| नालंदा पर मुहंम्मद बख्तियार खिलजी (लगभग १२००) ने हमला किया और उसे जला दिया, लेकीन यह छापे के बाद दशको (या संभवतः सदियो) तक चालू रहणे में कामयाब रहा|

लगभग ७५० वर्षों में, नालंदा के संकाय में महायान बौद्ध धंम्म के कूछ सबसे प्रतिष्ठित विद्वान शामिल थे| ईतिहासकार विलियम डेलरिंपलने नालंदा के बारे में काहा की, "अपने चरम पर, यह महायान बौद्ध दुनिया का निर्विवाद विद्वान केंद्र था|" मठ से जुडे शिक्षको और छात्रों में धंम्मपाल, नागार्जुन, धंम्मकीर्ति, असंग, वसुबंधू, चंद्रकीर्ति, जुआनजांग, शिलभाद्र, और वज्रबोधि शामिल थे| नालंदा के पाठ्यक्रम में मध्यमक, योगाचार और सर्वास्तिवाद जैसे प्रमुख बौद्ध दर्शन के साथ–साथ वेद, व्याकरण, चिकित्सा, तर्कशास्त्र, गणित, खगोल विज्ञान और किमिया जैसे अंन्य विषय शामिल थे| महाविहार में एक प्रसिद्ध पुस्तकालय था जो संस्कृत ग्रंथों का एक प्रमुख स्त्रोत था जिसे जुआनजांग और इजिंग जैसे तिर्थयात्रियोंद्वारा पूर्वी आशिया में प्रेषित किया गया था| नालंदा मे रचित कई ग्रंथो ने महायान और वज्रयान के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई| इंममें धंम्मकीर्ति की रचनाएं, शांतिदेव का संस्कृत ग्रंथ बोधिसत्त्वचर्यावतार और महावैरोचन तंत्र शामिल हैं|

नालंदा का प्राचीन स्थल युनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं| २०१० में भारत सरकारने प्राचीन विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करणे के लिये एक प्रस्ताव पारित किया और राजगिर में एक समकालिन संस्थान, नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई| इसे भारत सरकारद्वारा राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान के रूप में सूचिबद्ध किया गया हैं|

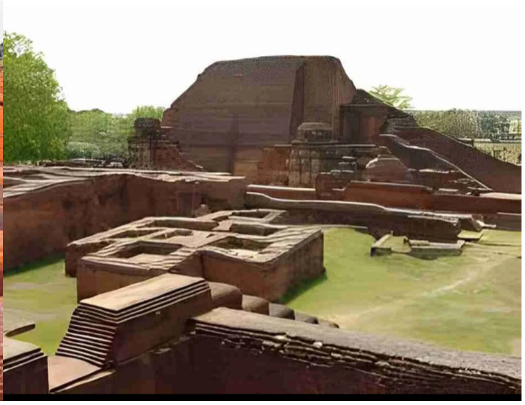

💎🦚☸☸ परिनिर्वाण स्तूप, कुशिनगर, उत्तर प्रदेश ☸☸🦚💎

परिनिर्वाण स्तूप एक बौद्ध विहार हैं जो उत्तर प्रदेश के कुशिनगर में स्थित हैं| ऐसी मान्यता हैं की भगवान बुद्ध का निर्वाण इसी स्थान पर हुंआ था| वर्तमान विहार का निर्माण १९५६ में भारत (अर्हंत/जंबुद्विप) सरकार ने कराया था, जब बुद्ध के महापरिनिर्वाण के २५०० वर्ष पुरे होणे के उपालक्ष में उत्सव मणाया गया था|

इस विहार के भितर भगवान बुद्ध की एक लेटी हुई प्रतिमा हैं| यह प्रतिमा ६ मिटर १० सेंटिमीटर लंबि हैं और जिसमे बुद्ध को अपने दाहिने भाग पर लेटे हुये दिखते हैं| उणका सिर उत्तर दिशा में हैं|

💎🦚☸☸ पावुरल्लाकोंडा, विशाखापत्तनंम, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

पावुरल्लाकोंडा या पावुरल्लाबोडू एक पहाडी हैं, जिसे लोकप्रिय रूप से नरसिंहस्वामी कोंडा के नाम से जाणा जाता हैं| यह भारत के आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनंम से लगभग २५ किमी उत्तर में भिमुनिपत्तनम के पास स्थित हैं|

पावुरल्लाकोंडा में एक खंडहर पहाडी बौद्ध मठ परिसर हैं, जिसमे तिसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दुसरी शताब्दी ईस्वी तक कही भी मानव निवास देखा गया था| यह उत्तरी तटिय आंध्र क्षेत्र के सबसे बडे बौद्ध मठों में से एक हैं| इस पहाडी स्थल पर हिनयान बौद्ध धंम्म का पालन किया जा सकता हैं| [उद्धरण आवश्यक]

इस स्थल की प्रारंभिक खुदाई में कई अवशेष मिले हैं| खंडहरो में दो ब्राम्ही (धंम्म) लिपि लेबल सिलालेख, विहारों की निव, गोलाकार चैत्य, मंन्नत स्तूप और हॉल हैं| आंध्र प्रदेश पुरातत्त्व और संग्रहालय विभाग द्वारा साईट से सिक्के, पॉलिश किय गये बर्तन, मोती और अंन्य कलाकृतियां बरामद की गई| वर्षा जल के भंडारण के लिये पहाडी पर लगभग सोलह चट्टान–कट कुंड बनाये गय थे| पावुरल्लाकोंडा में उत्खनन और जीर्णोद्धार कार्यक्रम जारी हैं| [उद्धरण आवश्यक]

गोस्थानी नदी इस स्थल के पास बहती हैं और विशाखापत्तनम जिल्हे के दो बौद्ध स्थलो बाविकोंडा और थोटलाकोंडा के पास हैं|

इंडीयन नॅशनल ट्रस्ट फॉर आर्टस् अँड कल्चरल हेरिटेज (INTACH) में अधिकारीयों से अपिल की हैं की वें बाविकोंडा, पोटलाकोंडा, पावुरल्लाकोंडा, और बोज्जन्नाकोंडा को युनेस्कोद्वारा विरासात स्थल के रूप में नामित किय जाणे के बाद बौद्ध स्थलों की बेहत्तर सुरक्षा सुनिश्चित करे|

💎🦚☸☸ बंगाल बौद्ध संघ, पिलखाना, कोलकत्ता, पश्चिम बंगाल ☸☸🦚💎

इस संस्था की स्थापना ५ अक्तुबर १८९२ को कृपाशरण महास्थविरद्वारा की गई थी| यह आधुनिक दक्षिण एसियायी बौद्ध धाराओं जैसे की श्रीलंकाई बौद्ध आधुनिकवाद के साथ-साथ पश्चिमी ओरिएंटल विद्वत्ता और थियोसोफी जैसे आध्यात्मिक आंदोलनों से प्रभावित थी| संगठन का उद्देश भारत में बौद्ध धंम्म के सिद्धांतों को पुनर्जीवित करना, उनाका अभ्यास करना और उनके प्रचार करना तथा बौद्ध अध्ययनों को बढावा देना था| १९०३ में असोशियशन द्वारा कोलकत्ता में बो बैरक में धंम्मकुर बौद्ध विहार की स्थापना की गई थी| १९०८ में उनकी पत्रिका जगज्योति पहली बार प्रकाशित हुई थी|

💎🦚☸☸ बाविकोंडा बौद्ध परिसर, विशाखापत्तनंम, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

बाविकोंडा बौद्ध परिसर भारत के आंध्र प्रदेश राज्य के विशाखापत्तनम से लगभग १६ किमी दूर, समुदे तल से लगभग १३० मिटर ऊपर एक पहाडी पर स्थित हैं| तेलुगू में बाविकोंडा शब्द का अर्थ हैं कुओं की पहाडी| अपने नाम के अनुसार, बाविकोंडा एक पहाडी हैं, जिसमे वर्षा जल के संग्रह के लिये कुये हैं| बाविकोंडा मठ के खंडहर तिसरी शताब्दी इसा पूर्व के हैं|

💎💎🦚☸☸ बोज्जन्नाकोंडा, रेबका, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

बोज्जन्नाकोंडा और लिंगलाकोंडा दो बौद्ध गुंफाए हैं जो भारत के आंध्र प्रदेश में शंकरंम नामक गाँव के पास स्थित हैं| ऐसा माना जाता हैं की गुंफाओं का निर्माण ४ थी और ९ वीं शताब्दी ई. के बीच हुवा था| यह वह समय था जब बौद्ध धंम्म की सभी विचारधारायें – हिनयान, महायान और वज्रयान शंकरम में पणपी थी|

बोज्जन्नाकोंडा और लिंगलाकोंडा गुंफाए एक ही पहाडी पर स्थित हैं, लेकीन अलग–अलग दिशाओं में| बोज्जन्नाकोंडा पहाडी के पूर्वी भाग में स्थित हैं, जबकी लिंगलाकोंडा पहाडी के पश्चिमी भाग में स्थित हैं| पहाडियों में कई अखंड स्तूप, चट्टान से बनी गुंफायें, चैत्य और मठ हैं जो इस पहाडी को आंध्र प्रदेश में बौद्ध विहारों के लिये सबसे उल्लेखनिय स्थानों में से एक बनाते हैं|

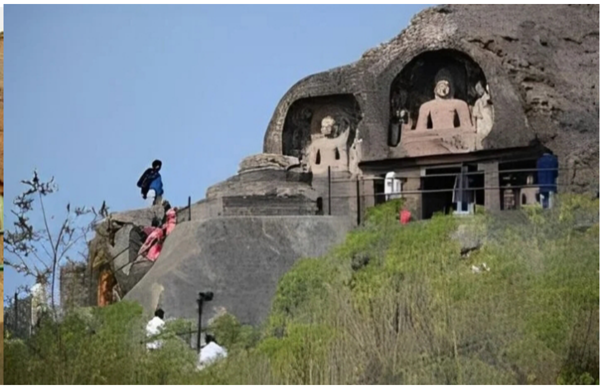

💎🦚☸☸ भीम जन्मभूमि, डॉ. आंबेडकर नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश ☸☸🦚💎

भीम जन्मभूमि मध्य प्रदेश के डॉ. बाबासाहब आंबेडकरजी नगर (महू) में स्थित बाबासाहब डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकरजी की जन्मस्थली स्मारक हैं| आंबेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८९१ को एक सैन्य छावणी महू के काली पलटण ईलाके में हुआ था| याहा मध्य प्रदेश सरकारने उनकी जन्मस्थलीपर एक भव्य स्मारक बणाया हैं, जिसे "भीम जन्मभूमि" नाम दिया गया हैं| स्मारक की निंव १४ अप्रैल १९९१ को १०० वीं आंबेडकर जयंती के दिन मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवाद्वारा रखी गई थी| स्मारक की रचना वास्तुकार ईडी निमगडेद्वारा की गई थी| बाद में स्मारक को १४ अप्रैल २००८ को ११७ वीं आंबेडकर जयंती के मौके पर लोकार्पित किया गया|

हर साल देश विदेश से लाखो आंबेडकर तथा बौद्ध अनुयायी और पर्यटक आंबेडकर को अभिवादन करणे इस जन्मभूमि पर जाते हैं| यह स्थान भोपाल से लगभग २२० और इंदौर से २० किमी की दुरी पर स्थित हैं| इस स्थान पर आंबेडकर को अभिवादन करणे के लिये भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीने २०१६ में १२५ वीं आंबेडकर जयंती के दिवस पर दौरा किया था| २०१८ में १२७ वीं आंबेडकर जयंती पर भारत के राष्ट्रपती रामनाथ कोविंदने महू का दौरा करके डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को अभिवादन किया था| पंचतीर्थ के रूप में भारत सरकारद्वारा विकसित कीये जा रहे आंबेडकर के जीवन से संबंधित पांच स्थलो में से यह एक महत्त्वपूर्ण स्थान हैं|

💎🦚☸☸ महाबोधि विहार, बोधगया, बिहार ☸☸🦚💎

महाबोधि विहार (शाब्दिक अर्थ: 'महान जागृति विहार') या महाबोधि महाविहार, एक युनेस्को विश्व धरोहार स्थल, भारत के बिहार के बोधगया में एक प्राचीन, लेकीन पुनर्निर्मिती बौद्ध विहार हैं, जो ऊस स्थान को चिंन्हित करता हैं, जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआं था| बोधगया गया से १५ किमी (९.३ मील) और पटणा से लगभग ९६ किमी (६० मील) दूर हैं| इस स्थल में बोधिवृक्ष का वंशज हैं, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था और यह दो हजार पांचसो अळसट (२५६८) से अधिक वर्षों से बौद्धों का एक प्रमुख तिर्थस्थल हैं|

इस स्थल के कुच्छ तत्त्व अशोक (मृत्यू लगभग २३२ ईसा पूर्व) के काल के हैं| अब जो जमीन पर दिखाई देता हैं, वह ६ वीं शताब्दी ईसा पूर्व या संभवतः उससे भी पहले का हैं, साथ ही १९ वीं शताब्दी के बाद से कई प्रमुख जीर्णोद्धार भी हुये हैं| हालाकिं, संरचना में संभवतः पहले के काम के बडे हिस्से भी शामिल हैं, संभवतः दुसरी या तिसरी शताब्दी ईसा पूर्व के| इस स्थल से प्राप्त पुरातात्त्विक खोजों से पता चलता हैं की यह स्थान कम से कम मौर्य काल से ही बौद्धों के लिये पूजनीय स्थल था| विशेष रूप से, विहार के भितर स्थित वज्रासन को तिसरी शताब्दी ईसा पूर्व का माना गया हैं|

सबसे पुराणे मूर्तिकला तत्त्वों में से कई को विहार के बगल में संग्रहालय में ले जाया गया हैं, और कूछ, जैसे की मुख्य संरचना के चारो ओर नक्काशिदार पत्थर की घेराबंदी (रेलिंग) दीवार, को प्रतिकृतियों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया हैं| मुख्य विहार का अस्तित्त्व विशेष रूप से प्रभावशाली हैं, ल्योंकी यह जादातर इंट से बना था, जो प्लास्टर से ढका हुआ था, जो सामग्री पत्थर की तुलना में बहुत कम टिकाऊ होती हैं| हालाकिं, यह समझा जाता हैं की मुल मूर्तिकला सजावट का बहुत कम हिस्सा बच गया हैं|

विहार परिसर में दो बडे सिधे–किणारे वाले शिखर टॉवर शामिल हैं, जिनमें से सबसे बडा ५५ मिटर (१८० फिट) से अधिक ऊंचा हैं| यह एक शैलिगत विशेषतः हैं जो आज तक जैन और हिंदू मंदिरों में जारी हैं, और इसने अंन्य देशों में बौद्ध वास्तुकला को प्रभावित किया हैं, जैसे की शिवालय|

💎🦚☸☸ महाबोधि विहार, बोधगया शहर, बोधगया, बिहार ☸☸🦚💎

यह विहार मुख्य विहार या महाबोधि विहार के नाम से भी जाणा जाता हैं| ईस विहार की बनावट सम्राट अशोकद्वारा स्थापित स्तूप के समान हैं| ईस विहार में गौतम बुद्ध की एक बहुत बडी मूर्ति स्थापित हैं| यह मूर्ति पद्मासन की मुद्रा में हैं| यहां यह अनुशृति प्रचलित हैं की यह मूर्ति उसि जगह स्थापित हैं, जहां गौतम बुद्ध को बुद्धत्व (ज्ञान) प्राप्त हुआ था| विहार के चारो ओर पत्थर की नक्काशिदार घेराव (रेलिंग) बनी हुई हैं| ये घेराव ही बोधगया में प्राप्त सबसे पुराणा अवशेष हैं| इस विहार परिसर के दक्षिण–पूर्व दिशा में प्राकृतिक दृष्यों से समृद्ध एक पार्क हैं जहा बौद्ध भिक्खू ध्यान साधना करते हैं| आम लोग इस पार्क में विहार प्रशासन की अनुमति लेकरं ही प्रवेश कर सकते हैं|

इस विहार परिसर में उन सात (७) स्थानों को भी चिंन्हित किया गया है, जहा बुद्धने ज्ञान प्राप्ति के बाद सात सप्ताह व्यतित कीये थे| जातक कथाओं में उल्लिखित बोधिवृक्ष

(पिपल) भी यहाँ हैं| यह एक विशाल बोधिवृक्ष (पिपल) हैं जो मुख्य विहार के पीछे स्थित हैं| बुद्ध को इसी पिपल वृक्ष (बोधिवृक्ष) के निचे ज्ञान प्राप्त हुआ था| वर्तमान में जो बोधिवृक्ष (पिपल) वह ऊस बोधिवृक्ष (पिपल) की पांचवी पिढी हैं| विहार समूह में सुबाह के समय घण्टों की आवाज मन को एक अजीबसी शांति प्रदान करती हैं|

मुख्य विहार के पीछे बुद्ध की लाल बलुआ पत्थर की ७ फिट उंची एक मूर्ति हैं| यह मूर्ति वज्रासन मुद्रा में हैं| इस मूर्ति के चारो ओर विभिन्न रंगों के पताके लगे हुये हैं, जो इस मूर्ति को एक विशिष्ट आकर्षण प्रदान करते हैं| कहा जाता हैं की तिसरी शताब्दी ईसा पूर्व में ईसी स्थानपर सम्राट अशोकने हिरों से बना राजसिंहांसन लगवाया था और इसे पृथ्वी का नाभि केंद्र कहा था| इस मूर्ति के आगे भुरे बलूये पत्थरपर बुद्ध के विशाल पदचिन्ह बने हुये हैं| बुद्ध के इन पदचिन्हों कों धंम्मचक्क पवत्तन (धंम्मचक्र प्रवर्तन) का प्रतिक माना जाता हैं|

बुद्धने ज्ञान प्राप्ति के बाद दुसरा सप्ताह ईसी बोधिवृक्ष (पिपल) के आगे खडी अवस्था में बिताया था| यहांपर बुद्ध की इस अवस्था में एक मूर्ति बनी हुंई हैं| इस मूर्ति को 'अनिमेश लोचन' कहां जाता हैं| मुख्य विहार के उत्तर–पूर्व में अनिमेश लोचन चैत्य बना हुआ हैं|

मुख्य विहार का उत्तरी भाग चंकामाना नाम से जाणा जाता हैं| ईसि स्थानपर बुद्धने ज्ञान प्राप्ति के बाद तिसरा सप्ताह व्यतित किया था| अब यहाँपर काले पत्थर का कमल का फुल बना हुआ हैं, जो बुद्ध का प्रतिक माना जाता हैं|

महाबोधि विहार के उत्तर–पश्चिम भाग में एक छतविहीन भग्णावशेष हैं जो रत्नाघारा के नाम से जाणा जाता हैं| ईसी स्थानपर बुद्धने ज्ञान प्राप्ति के बाद चौथा सप्ताह व्यतित किया था| दंतकथाओं के अनुसार बुद्ध यहां गहण ध्यान में लिन थे की उनके शरीर से प्रकाश की एक किरण निकली| प्रकाश के इंन्हिं रंगों का उपयोग विभिन्न देशोंद्वारा यहां लगे अपने पताके में किया हैं|

बुद्धने मुख्य विहार के उत्तरी दरवाजेसे थोडी दूरपर स्थित अजपाला–निग्रोधा वृक्ष के निचे ज्ञान प्राप्ति के बाद पांचवा सप्ताह व्यतित किया था| बुद्धने छठा सप्ताह महाबोधि विहार के दांयीं ओर स्थित मुचालिंदा क्षिल के नजदीक व्यतित किया था| यह क्षील चारों तरफ से वृक्षों से घिरा हुआ हैं| इस क्षिल के मध्य में बुद्ध की मूर्ति स्थापित हैं| इस मूर्ति में एक विशाल सांप बुद्ध की रक्षा कर रहा हैं| ईस मूर्ति के संबंध में एक दंतकथा प्रचलित हैं| इस कथा के अनुसार बुद्ध प्रार्थना में इतने तल्लीन थे की उन्हें आंधी आने का ध्यान नहीं रहा| बुद्ध जब मुसलाधार बारिश में फस गए तो सांपों का राजा मुचालिंदा अपने निवास से बाहर आया और बुद्ध की रक्षा की|

इस विहार परिसर के दक्षिण–पूर्व में राजयातना वृक्ष हैं| बुद्धने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपणा सांतवा सप्ताह ईसी वृक्ष के नीचे व्यतित किया था| यहिं बुद्ध दो बर्मी (बर्मा का निवासी) व्यापारियों से मिले थे| इन व्यापरियोने बुद्ध से आश्रय की प्रार्थना की| इन प्रार्थना के रूप में "बुद्धं सरणं गच्छामी" (मैं बुद्ध को शरण जाता हु) का उच्चारण किया| ईसी के बाद से यह प्रार्थना प्रसिद्ध हो गई|

💎🦚☸️☸️ रिवालसर झील, रेवलसर, हिमाचल प्रदेश ☸️☸️🦚💎

हिमाचल प्रदेश के भारतीय राज्य में स्थित रिवालसर झील एक मनमोहक जगाह हैं, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और आध्यात्मिक महत्त्व से यात्रियों को लुभाती हैं| यह शांत उंचाईवाली झील हरे–भरे जंगलों और विचित्र गांवो से घिरी हुई हैं, जो इसे प्रकृति प्रेमियों और तिर्थयात्रियों के लिये एक आदर्श स्थान बनाती हैं| रिवालसर झील घुमने का सबसे अच्छा समय वसंत और गर्मियों के महिनों के दौरांन, अप्रैल से जून तक होता हैं जब मौसम सुहावना होता हैं और आसपास के परिदृष्य जिवंत रंगों में खिल उठते हैं| मंडी और शिमला जैसे आस–पास के शहरों से सडक मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकनेवाला रिवालसर झील अपने शांत पाणी, प्राचीन मठों और एक अनोखे तैरते द्वीप के साथ आगंतुको को आकर्षित करता हैं, जो ईसके रहस्यमय आकर्षण को बढाता हैं| चाहे आप आध्यात्मिक शांति चाहते हों या प्रकृति की सुंदरता में खुद को डुबोना चाहते हो, हिमालय के हृदय में रिवालसर झील एक ऐसी जगह हैं जहाँ आपको जरूर जाणा चाहिए|

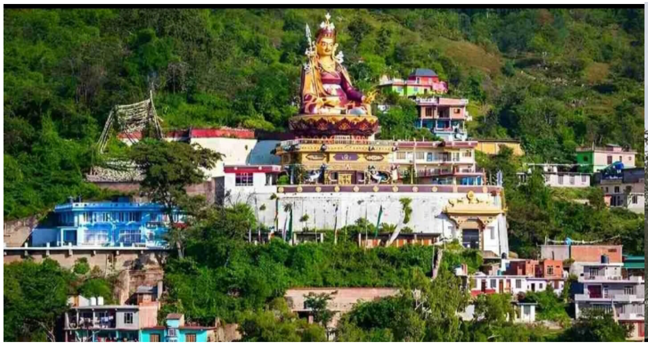

💎🦚☸️☸️ विश्व शांति स्तूप, राजगिर, बिहार ☸️☸️🦚💎

बिहार के राजगिर में स्थित विश्व शांति स्तूप (विश्व शांति शिवालय) शांति, सद्भाव और अहिंसा का प्रतिक हैं| रत्नागिरी पहाडी के ऊपर स्थित यह स्तूप राजगिर के सबसे प्रतिष्ठित स्थलों में से एक हैं और दुनियाभर से पर्यटकों को आकर्षित करता हैं, खासकर बौद्ध धंम्म और आध्यात्मिकता में रुची रखनेवाले लोगों को|

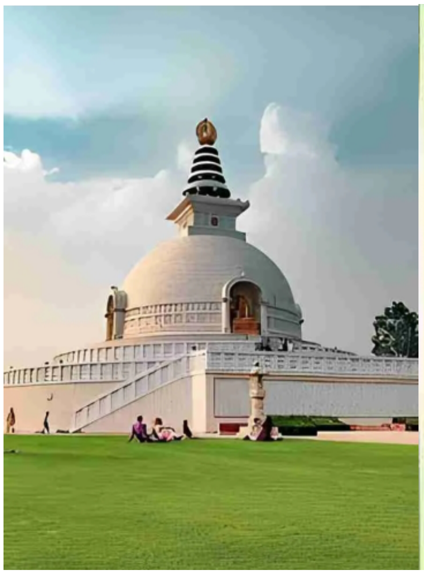

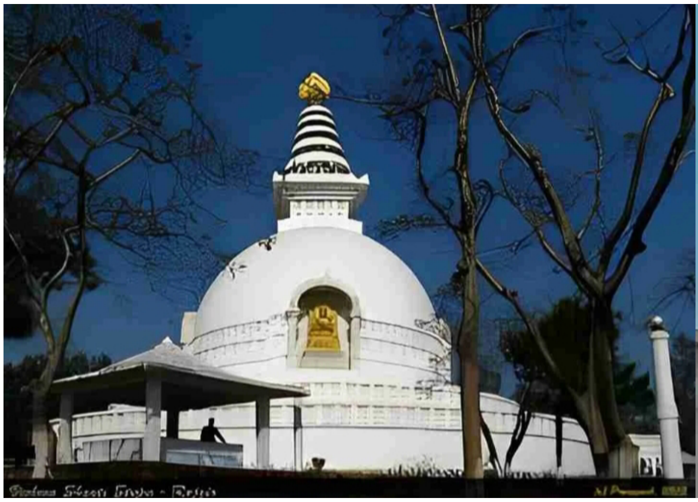

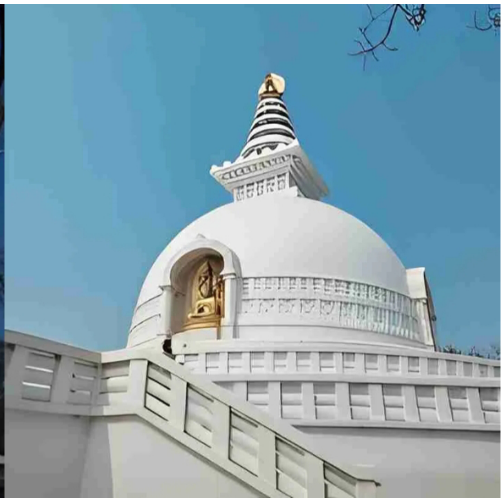

💎🦚☸☸ शशुर मठ, लाहूआल, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

हिमालय के पहाडी इलाकों के बीच एक छोटा और अनोखा बौद्ध विहार हैं जिसे शशुर मठ कहा जाता हैं| "शशुर" का शाब्दिक अर्थ हैं नीले चीड के पेड; यह मठ के नाम के साथ पुरी तरह से मेल खाता हैं, क्योंकी यह नीले चीड के पेडों से घिरा हुआ हैं, जो एक दुसरे के कंधे साझा करता हैं|

शशुर मठ तिब्बती बौद्ध धंम्म के गेलुक्यां आदेश या लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित हैं| मठ की स्थापना १६ वीं शताब्दी में लाद्दाख के लामा देवा त्यात्शोंने की थी, लेकीन कूछ समय बाद इसका निर्माण रोक दिया गया था| बाद में, मठ का निर्माण १७ वीं शताब्दी में लामा देवा ग्यात्शो द्वारा फिर से शुरू किया गया| यह भी माना जाता हैं की देवा ग्यात्शों अपनी मृत्यू तक मठ में रहे|

शशुर मठ घाटी से ६०० मिटर की उंचाई पर स्थित हैं, और मठ तक पहुंचने के लिये पहाडी इलाकों और संकरी घाटी से होकर गुजरणा पडता है| मंडला अवधारणा के अनुसार निर्मित, जिसका मुल स्वरूप एक वर्ग हैं जिसमें चार द्वार हैं, जिसमे एक केंद्र के साथ एक वृत्त हैं, शाहशुर मठ की प्रशंसा पुरे भारत में ईसकी उत्कृष्ठ वास्तुकला के लिए की जाती हैं| मठ की दीवारों कों बौद्ध धंम्म के ८४ सिद्धों, ५ मिटर थंगका (सुंदर रेशम पेंटिंग जिसपर कढाई की गई हैं) और नामग्याल की मूर्ति को दिखाते हुंये एक सुंदर चित्रों से सजाया गया हैं|

मठ जून और जुलै के महिने में अपने सबसे अच्छे रूप में होता हैं, क्योंकी यहा एक वार्षिक उत्सव आयोजित किया जाता हैं| वार्षिक उत्सव के दौरानं, रंगिन कपडे पहणे और नकाबपौष भिक्खु शैतान नृत्य करते हैं, जिसे व्यापक रूप से चाम नृत्य के रूप में जाना जाता हैं| शाहशुर मठ एक प्रमुख तिब्बती बौद्ध धंम्म सिखणे का केंद्र भी है, जो न केवल भारत बल्की दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता हैं|

💎🦚☸☸ शेरबलिंग मठ, केओरी, हिमाचल प्रदेश ☸☸🦚💎

कांगडा घाटी की तलहटी में स्थित पालपुंग शेरबलिंग मठ उपरी भट्टू क्षेत्र में स्थित हैं| सडक के किनारे रंगिन बौद्ध प्रार्थना झेंडो के साथ देवदार के जंगल के बीच एक शांत सैर आपको गोंपा तक ले जाती हैं| मठ में तिर्थस्थल, एक मठवासी कॉलेज, एक स्कूल, एक पुस्तकालय, एक संग्रहालय, एक प्रदर्शणी हॉल और एक औषधालय हैं, और यह सभी देवदार के जंगल के अंदर बने हुये हैं| यह शांत प्रकृति के बीच एक अलग दुनिया की तरह हैं, जहाँ खुशमिजाज बच्चे, युवा और बुढे जीवन का जश्न मनाते दीखते हैं| मुख्य प्रार्थना कक्ष के पीछे एक छोटी कॅन्टीन हैं, जहाँ आप नुडल्स, थुकपा, चाय आदि ले सकते हैं| सूर्यास्त के समय वाहां जाए और एक अद्भुत दृश्य का आनंद ले, जब सूनहरी किरणे पुरे जंगल, खेतो और गांवो को अपनी चपेट में लेती है|

💎🦚☸☸ संकल्प भूमि, सयाजी बाग, वडोदरा, गुजरात ☸☸🦚💎

संकल्प भूमि डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को समर्पित एक स्मारक और ऐतिहासिक स्थल हैं, जो गुजरात राज्य के वडोदरा (बरोडा) में स्थित हैं| यह स्थल हर साल लाखों लोगों द्वारा भ्रमण किया जाता हैं|

२३ सितंबर १९१७ को, आंबेडकरने सयाजी बाग में यह संकल्प लिया था की, वे अपना जीवन जातिवाद से पीडित और शोषित अपनी बहुजन समुदाय को मुक्त कराने के लिये समर्पित करेंगे| ईस ऐतिहासिक स्थान को १४ अप्रैल २००६ को "संकल्प भूमि" नाम दिया गया| गुजरात सरकारद्वारा याहां डॉ. आंबेडकर का एक भव्य स्मारक बणाने की योजना हैं|

संकल्प भूमि अब गुजरात में एक प्रमुख बौद्ध और अनुसूचित जाति तिर्थ स्थल के रूप में विकसित किया गया हैं, जहाँ लोग बौद्ध धंम्म में दीक्षा लेणे के लिये आते हैं| यह स्थल डॉ. आंबेडकर के जीवन और उनके द्वारा समाज में किये गये योगदान को याद करणे और उनके आदर्शों को आत्मसात करणे का केंद्र बन गया हैं|

💎🦚☸☸ सालिहुंडम, अंबालावलासा, आंध्र प्रदेश ☸☸🦚💎

सालिहुंडम, आंध्र प्रदेश के श्रिकाकुलम जिल्हे के गारा मंडल में एक गाँव और पंचायत हैं| यह प्राचीन कलिंग का ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण बौद्ध स्मारक और एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं| यह वामंसाधारा नदी के दक्षिणी तटपर पहाडी की चोटी पर स्थित एक गाँव हैं| यह कलिंगपट्टनम से ५ किमी पश्चिम और सिंगुपुरम से १० किमी और श्रिकाकुलम शहर से १८ किमी की दुरी पर हैं| ईसे सालिपेटका (तेलुगू में जिसका अर्थ चावल का भंडार हैं|) के नाम से जाणा जाता था|

–